5-6 अगस्त 2022
मूल्य : 5.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN36496

मासिक जागरण पत्रिका

स्वराज के 75 वर्षों का महोत्सव

सभी भारतीय तीन दिन तक अपने घर पर तिरंगा लगाकर मनाएंगे

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल-दर-साल फायदा पहुंचाए.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख-रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण-अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

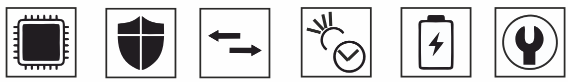

कार्यप्रणाली

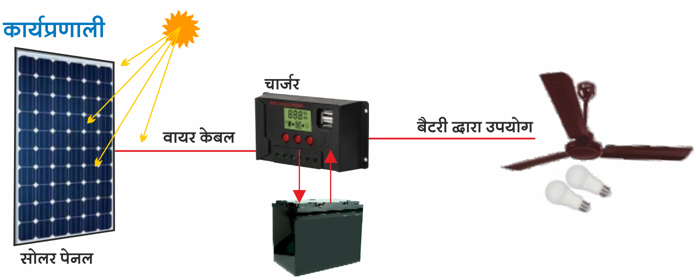

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500

ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 अगस्त 2022 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN36496
वर्ष : 01 अंक : 13

श्रावण–शुक्ल
युगाब्द ५१२४

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी–1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731–3551341

Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्‍व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए–11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी–1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरुण सपकाले फोन नं. 0731–3551341

अपनी बात

ॐ

भारतवर्ष स्वराज के इस अमृतकाल में अपने भविष्य का स्वर्णिम पृष्ठ लिख रहा है। भारत का सोया स्वाभिमान जाग रहा है। भारत आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। भारतीय संस्कृति को पूरा विश्व स्वीकार कर रहा है। हमारा देश एक महाशक्ति के रूप में पहचान बना चुका है। विश्व पटल पर भारत का मान और महत्व बढ़ रहा है। यह परिदृश्य देखकर लगता है कि भारत निकट भविष्य में दुनिया का नेतृत्व करेगा। भारत के जन-जन के मन में स्व का जागरण हो रहा है और वह अपने गौरवशाली अतीत को दोहराने को सतत प्रयत्नशील है।

भारत का प्रजातंत्र, समाज के अन्तिम व्यक्ति को सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित कर अभिभूत है। ऐसा लग रहा है जैसे शबरी की प्रतीक्षा समाप्त हुई और राम भी वनवास से लौटकर अपने निज निवास में पधार गये हैं। हरेक मन दीवाली मना रहा है और आशा के मंगलदीप जल रहे हैं। भारत अपने परमवैभव की ओर निरन्तर बढ़ रहा है।

अब वह गौरवशाली पल आ गए हैं जब हम अपना राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा घर-घर में लहराएं और यह शपथ लें कि अन्तिम सांस तक इसकी आन-बान और शान को आंच नहीं आने देंगे। इस ध्वज को लहराने के लिए जिन वीरों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया उनका पावन स्मरण कर श्रद्धासुमन अर्पित करें। अमृतमहोत्सव के इन ऐतिहासिक क्षणों में हम अपने भारत को स्वावलम्बित बनाकर स्वदेशी भाव का जागरण कर स्व-तंत्र की स्थापना कर आत्मनिर्भर बनाकर पर-तंत्र की बेड़ियाँ काटकर स्वाभिमान के साथ विश्व का सिरमौर बनाएं। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' मंत्र का जापकर भारत माता को विश्वगुरू के सिंहासन पर पुनः आसीन करें।

भारतीय संस्कृति ही वह देव-संस्कृति है जो अखिल विश्व में परम शांति स्थापित कर सकती है। भारतीय संस्कृति की अमर पताका विश्व गगन में फहराकर विश्वजनों का मार्ग प्रशस्त हम सभी भारतवासियों को करना है। इस तैयारी के साथ सचेत रहकर हमें अपने शुभ कर्मों को अन्तिम लक्ष्य तक पहुंचाना है।

अमृत ही अमृत होगा अब, सारा विष पी जाएगें।
मृत्युन्जयी संताने है हम, मरकर भी जी जायेगें।।

अमृत का उत्सव

अमन व्यास

इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर देश भर में अमृत महोत्सव के अंतर्गत हर घर तिरंगा अभियान मनाने की योजना है, यह अभी तक के देश के प्रमुख अभियानों मे से एक है। देश के बीस करोड़ घरों में तीन दिन तक तिरंगा लगाकर इस अभियान को मनाने की योजना है। क्या है हर घर तिरंगा अभियान पढ़िए

15 अगस्त को अंग्रेजों को भारत से खदेड़ते हुए 75 बरस पूरे हो रहे हैं। भारत के लिए यह समय उत्सव का है। साथ ही सिंहावलोकन का भी है कि पिछले 75 वर्षों में हमारी उपलब्धि क्या रही, हमने क्या पाया, क्या गलतियाँ रह गई और अगले 25वर्षों में हमें देश को कहाँ ले जाना है वह सोचने का, योजना बनाने का और क्रियान्वयन करने का भी यह समय है।

यह सच में अमृत का महोत्सव है, अंग्रेजों को जब भारत से खदेड़ा जा रहा था तब वे कह रहें थे कि भारत हमारे जाने के बाद बिखर जाएगा, किन्तु वे नही जानते थे कि भारत निखर जाएगा। देशों के लिए 75 बरस बड़ी बात नहीं होती, इतिहास की पुस्तकों का एक पन्ना पलटने पर एक शताब्दी बदल जाती है, लेकिन भारत ने इन 75 बरसों में इतने कीर्तिमान रचें कि एक-एक कीर्तिमान पर पुस्तके लिखी जा सकती इतिहास बन सकता है। हमने इतने बरसों मे क्या किया इसका सही अनुमान तब लगेगा जब 1947 के आसपास स्वतंत्र हुए देशों की आज हम स्थिति देखेंगे और स्थिति स्पष्ट है कि भारत उद्योग, शिक्षा, कृषि, साहित्य, कला, खेल सभी में निरंतर द्रुत गति से आगे बढ़ रहा है।

इसलिए यह उत्सव का समय है, कोई भी उत्सव या त्यौहार हो तो उसके मनाने की कोई विशेष प्रक्रिया होती है और विशेष कारण व लक्ष्य होता है।

अमृत महोत्सव मनाने का कारण तो हम जान चुके, लेकिन इसे मनाना कैसे है यह भी जानना होगा।

अमृत महोत्सव देश के प्रत्येक नागरिक का उत्सव है, यह राष्ट्र के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति के प्रकटीकरण का भी उत्सव है, इसलिए राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति श्रद्धा रखकर, उनका सम्मान कर और विविध देशभक्ति कार्यक्रमों का आयोजन कर हम सभी को **"अमृत महोत्सव"** मनाना है।

इसके लिए कुछ कार्यक्रम सरकार के द्वारा, उनके सहयोग से, कुछ कार्यक्रम संगठनों द्वारा तो कुछ अन्य-अन्य स्तरों पर होंगे ऐसे में अमृत महोत्सव के निमित्त होने वाले कुछ प्रमुख कार्यक्रमों को समझ लीजिए।

हर घर तिरंगा अभियान

यह अमृत महोत्सव का सबसे विशाल और महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम मे सरकार से लेकर देश के सभी छोटे-बढ़े संगठन और प्रशासन सब तयारी कर रहें है इस अभियान के स्तर का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि देशभर के 1.6 लाख पोस्ट ऑफिस पर आखिरी समय तक तिरंगा विक्रय के लिए उपलब्ध रहेगा।

कैसे मनाएगे भारतवासी हर घर तिरंगा अभियान

भारत के स्वराज्य प्राप्ति के 75 वर्ष पूर्ण होने पर तीन दिन यानि 13 से 15 अगस्त तक देशवासियों से अपने घर पर तिरंगा लगाने का आग्रह किया गया है। देश के करोंं घरों पर इन तीन दिनों में तिरंगा लहराएगा। इससे सभी भारतीय अपने राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान को प्रकट कर सकेंगे।

इस अभियान की सफलता के लिए केंद्र से निकाय तक सरकारें, प्रशासन व सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ता कार्य रहें है।

केंद्र सरकार भी विशेष प्रयोग और नीतियाँ बना रही है ताकि इतने बे अभियान के दौरान राष्ट्रीय ध्वज का कोइ अपमान भी न हो।

इसके लिए कई जनजागरण कार्यक्रम भी चल रहें है, जिनमे तिरंगा फहराने के नियम और तरीके बताए जा रहें है।

तिरंगा फहराते समय यह ध्यान रखे

तिरंगा फहराते समय हमारे मन में कई संशय आते है कई बार नियमों के बारे में पता नहीं होने के कारण हम अनजाने में राष्ट्रीय ध्वज का अपमान कर देते है। इसलिए राष्ट्रीय ध्वज कैसा होना चाहिए, कब फहराना चाहिए,कैसे फहराना और उतारना चाहिए यह हमें पता होना चाहिए।

हाल ही में **''फ्लैग कोड ऑफ इंडिया 2002''** में कुछ परिवर्तन हुए है तो उसी आधार पर वर्तमान के **''तिरंगा''** संबंधी नियमों को जानना चाहिए।

1. किसी व्यक्ति या वस्तु को सलामी देने के लिए झंडे को झुकाया नहीं जाना चाहिए।

2. झंडे को आधा झुका कर नहीं फहराया जाना चाहिए, सिवाय तब, जब सरकारी भवनों पर झंडे को आधा झुका कर फहराने के आदेश जारी किए गए हों।

3. किसी प्रतिमा के अनावरण पर झंडे को सम्मान के साथ अलग से रखा जाना चाहिए।

4. झंडे की केसरिया पट्टी को नीचे करके नहीं फहराया जाना चाहिए। तिरंगा इस तरीके से फहराया जाना चाहिए कि सबसे ऊपर केसरिया पट्टी और सबसे नीचे हरी पट्टी रहे।

5. जब कभी राष्ट्रीय झंडा फहराया जाए, तो उसे सम्मानजनक तरीके से फहराया जाना चाहिए। मतलब फटा हुआ या मैला-कुचैला झंडा नहीं फहराया जाना चाहिए।

6. झंडे को जमीन या फर्श को छूने या पानी में घिसटने नहीं देना चाहिए।

7. झंडे को इस तरह से फहराया या बांधा नहीं जाना चाहिए जिससे कि उसे क्षति पहुंचे।

8. किसी दूसरे झंडे को राष्ट्रीय झंडे से ऊंचा या उससे ऊपर या उसके बराबर में नहीं लगाना चाहिए।

9. फूल, माला, प्रतीक या कोई दूसरी कोई चीज झंडे के डंडे के ऊपर नहीं होनी चाहिए।

इसके साथ ही **''फ्लैग कोड ऑफ इंडिया 2002''** में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है जो हमें जानना चाहिए।

1.अभी तक हाथ से बुना और काता हुआ ऊन, कपास या रेशमी खादी से बना राष्ट्रीय ध्वज ही फहराने की अनुमति थी। लेकिन अब मशीन से बना हुआ कपास, उन या रेशमी खादी से बना तिरंगा भी फहरा सकते हैं। साथ ही अब पॉलिएस्टर से बना तिरंगा भी फहराया जा सकता है।

2. अब तक किसी घर, निजी संगठन या दूसरे संस्थानों में तिरंगे को सूर्योदय से सूर्यास्त तक ही फहराने की अनुमति थी। रात के समय राष्ट्रीय ध्वज को को नहीं फहराया जा सकता था। लेकिन अब आम लोग, निजी संगठन या संस्थान दिन और रात में तिरंगा फहरा सकते हैं। यानी, 24 घंटे तिरंगा फहरा सकते है।

अब प्रश्न आता है कि तिरंगे का आकार क्या होगा?

भारत में तिरंगे के साइज को लेकर कोई नियम नहीं है। ये कितना भी बड़ा और कितना भी छोटा हो सकता है। लेकिन तिरंगा हमेशा आयताकार जिसका अनुपात 3.2 होगा ।

हालांकि, वीवीआईपी एयरक्राफ्ट पर 450×300 एमएम, मोटर कार पर 225×150 एमएम और टेबल पर 150×100 एमएम साइज का तिरंगा होगा।

तिरंगे में हमेशा सबसे ऊपर केसरिया और नीचे हरा रंग होगा. बीच में सफेद कलर होगा, जिस पर अशोक चक्र बना रहेगा। अशोक चक्र के अंदर 24 तीलियां ही होंगी, तिरंगे को उल्टा कर नहीं फहराया जा सकता।

देश भर में हर घर तिरंगा अभियान की धूम है, हम सभी को भी अपने आवास पर तिरंगा फहराकर इस अभियान मे सहभागी होना चाहिए। इस अभियान को डिजिटल भी किया गया है जिसके लिए **www.harghartiranga.com** वेबसाईट लॉन्च की गई है, जहां डिजीटली इस अभियान मे सहभागी बना जा सकता है, यहाँ प्रमाण पत्र भी दिए जाते है।

अन्य कार्यक्रम

हर-घर तिरंगा अभियान के इतर भी 15 अगस्त पर देश में विविध प्रकार के कार्यक्रम होने वाले है इनमे एक प्रमुख कार्यक्रम 'संस्कार भारती द्वारा आयोजित सामूहिक वंदे मातरम' का है, 15 अगस्त के दिन देश के विभिन्न क्षेत्रों में सामूहिक वन्दे मातरम कार्यक्रम के आयोजन किए जाएंगे।

इसके अलावा देश के महानगरों, नगरों व ग्रामों में अलग-अलग छोटे-बड़े कार्यक्रमों का आयोजन कर अमृत का यह महोत्सव मनाया जाएगा। हम सभी को अमृत महोत्सव मे भागीदार होना है और महोत्सव को महोत्सव जैसा ही मनाना है।

बाढ़ जिहाद

पांचजन्य से साभार

लव जिहाद, जमीन जिहाद, यूपीएससी जिहाद, थूक जिहाद के बाद कट्टरपंथियों का एक और जिहाद सामने आया है। यह जिहाद सबसे खतरनाक है, इससे एक ही बार में कई गांवों व शहरों को डुबोकर, अनगिनत लोगों की जान ली जा सकती है। यह 'बाढ़ जिहाद' है,जो एक तरह का आतंक ही है।

फोटो में पुलिस गिरत में बाढ़ जिहाद को अंजाम देने वाले काबुल खान, मिटू हुसेन लस्कर, नजीर लस्कर और रिपन खान

असम के सिल्चर में हुए 'जल जिहाद' की आज हर तरफ चर्चा है। काबुल खान की अगुआई में चार मजहबी उन्मादियों के एक गिरोह ने सिल्चर, दक्षिणी असम में एक महत्वपूर्ण नदी तटबंध को जान-बूझकर तोड़ दिया, जिससे विनाशकारी बाढ़ आई और पूरे शहर को तबाह कर गई।

इसे 'जल जिहाद' नहीं तो और क्या कहा जाए? एक ऐसा मजहबी उन्मादी जिहाद जिससे हिन्दुओं की बड़े पैमाने पर क्षति हो। मजहबी उन्मादियों के इस गिरोह की विध्वंसक मानसिकता की वजह से आई बाढ़ ने सिल्चर शहर को तबाह कर दिया, हजारों की तादाद में लोगों को बाढ़ के प्रकोप का सामना करना पड़ा।

जब मई माह के मध्य में मानसून ने असम में प्रवेश किया था, तो लगातार ऐसी बारिश हुई कि राज्य में बाढ़ की पहली लहर देखने में आई। दक्षिणी असम की बराक घाटी भी मई के अंतिम सप्ताह में बाढ़ की चपेट में आ गई थी। बराक नदी असम की बराक घाटी में मुख्य जल स्रोत है जो सिल्चर शहर के किनारे से होते हुए बांग्लादेश में कुशियारा नदी की ओर बढ़ती है।

शहर से सिर्फ 3 किलोमीटर दूर, बेथुकंडी तटबंध शहर को शक्तिशाली बराक नदी की तेज धारा से बचाता आ रहा है। 22 मई को काबुल खान नाम के एक मजहबी उन्मादी ने अपने साथियों के साथ मिलकर बेथुकंडी तटबंध को तोड़ दिया। उन्होंने बेथुकंडी बांध के एक बड़े हिस्से को काट दिया जिससे वे उनकी अपनी जमीन को लगातार हो रही बारिश में भराव से बचा लें। उनके इस विध्वंसक कृत्य के कारण बारिश के पानी से भरी बराक नदी ने क्षतिग्रस्त तटबंध को देखते ही देखते तोड़ दिया। इसके बाद, बाढ़ की दूसरी लहर के साथ ही बराक का पानी सिल्चर में प्रवेश कर गया, जिससे 20 जून के बाद पूरा शहर विनाशकारी बाढ़ में डूब गया। ऐसी तबाही मची कि शहर में जलस्तर 2 मीटर तक पहुंच गया। शहर में 'मानव निर्मित बाढ़' के कहर में हजारों लोग विस्थापित हुए, अनगिनत घर बह गए, संपत्ति क्षतिग्रस्त हुई और कई लोगों की जान चली गई।

संस्कृत दिवस श्रावण पूर्णिमा (12 अगस्त)

भारतीय संस्कृति में संस्कृत को देवभाषा का दर्जा दिया गया है। समाज को संस्कृत की महत्ता और आवश्यकता बताने के साथ-साथ जन मानस में इसका महत्व बढ़ाने के लिए संस्कृत दिवस मनाया जाता है।

1969 में भारत सरकार ने श्रावण पूर्णिमा (रक्षाबंधन) के दिन संस्कृत दिवस मनाने का निर्णय कर केन्द्र व राज्य सरकारों को निर्देश जारी किया।

प्राचीन भारत में इसी दिन से शिक्षण सत्र प्रारम्भ होता था, विद्यार्थी भी शास्त्रों का अध्ययन प्रारम्भ करते थे। संस्कृत भाषा का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार हो, इसीलिए इस दिन विद्यालयों में गोष्ठी, कवि सम्मेलन, श्लोक प्रतियोगिता जैसे विविध कार्यक्रम संस्कृत सप्ताह के माध्यम से मनाए जाते है।

गोवा मुक्ति संग्राम के अमर बलिदानी- राजाभाऊ महाकाल

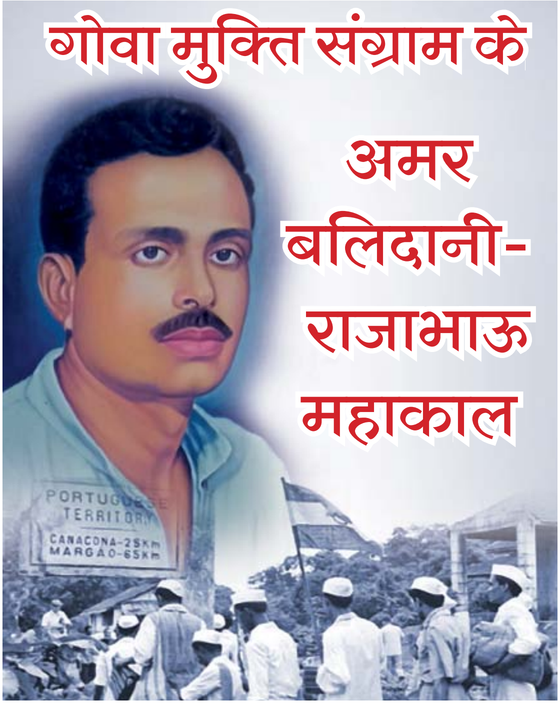

विनय दीक्षित

राजाभाऊ महाकाल का जन्म 26 जनवरी 1923 को उज्जैन में हुआ था।

❖ राजाभाऊ महाकाल बचपन में संघ के प्रचारक दिगम्बरराव तिजारे जी के संपर्क मे आए, स्वयंसेवक बने और फिर अपना सम्पूर्ण जीवन देश को समर्पित करते हुए संघ के प्रचारक बने। गाँव-गाँव मे संघ शाखाओं का विस्तार किया, देश के कार्य की धुन ऐसी थी कि चने, इमली या फल खाकर तो कभी भूखे रहकर ही कार्य करना पड़ता था।

❖ जब संघ परअकारण ही सरकार ने प्रतिबंध लगाया, संघ कार्यकर्ताओं को जेल में ठूँसा जाने लगा तो पुलिस ने राजाभाऊ को पकड़ने के कई प्रयास किए लेकिन राजाभाऊ सरकार के हाथ नहीं लगे। लेकिन जब संघ के सरसंघचालक श्रीगुरुजी ने 09 दिसंबर 1948 को प्रतिबंध हटाने का आह्वान किया तो राजाभाऊ के नेतृत्व में संघ सत्याग्रहियों ने जेलें भर दीं, विरोधी थर्रा उठे एवं संघ से प्रतिबंध हट गया। राजाभाऊ पुनः समाज संगठन के कार्य में लग गए।

❖ जब बंगाल से बड़ी संख्या में हिन्दू निर्वासित हुए तब संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्रीगुरुजी ने अभावग्रस्त हिन्दुओं की सहायता के लिए आह्वान किया तो राजाभाऊ ने देवास, शाजापुर के गाँव-गाँव जाकर अभावग्रस्त हिन्दुओं के लिए धन संचय किया।

❖ 27 अक्टूबर से 23 नवंबर 1952 तक संघ द्वारा गोहत्या निरोध आंदोलन चलाया गया। राजाभाऊ ने देवास के 418 गाँवों में अपने कार्यकर्ताओं को भेजकर 26,667 हस्ताक्षर करवाए।

❖ जब कश्मीर से 370 हटाने के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में आंदोलन शुरू हुआ तो राजाभाऊ ने इंदौर से दिल्ली लगभग 600 किलोमीटर की यात्रा गाँवों में प्रचार करते हुए पूरी की। दिल्ली जाकर सत्याग्रह करने पर दो मास का कठोर कारावास मिला। दिल्ली व फिरोजपुर में कठोर दंड सहने के बाद राजाभाऊ उज्जैन आ गए और राष्ट्रकार्य में लग गए।

❖ गोआ पर पुर्तगालियों का कब्जा था, जब लोहिया ने गोवा मुक्ति का आह्वान किया तो राजाभाऊ गोवा की स्वतंत्रता के लिए तड़प उठे और मालवा के बागली, सोनकच्छ और देवास से सैकड़ों कार्यकर्ताओं को लेकर उज्जैन आए और फिर वहाँ से इंदौर गए। इंदौर में राजाभाऊ ने जो भाषण दिया उससे यह तो स्पष्ट हो गया था कि वे देश के लिए आत्मबलिदान करने ही जा रहे हैं, इसीलिए उन्होंने अपने मित्र वाकणकर जी को जत्थे का नेतृत्व करने से रोका था और स्वयं ने नेतृत्व किया था।

❖ 10 अगस्त को इंदौरवासियों ने राजाभाऊ के जत्थे को विदाई दी और देशभक्तों का जत्था गोवा की मुक्ति के लिए रवाना हो गया। 14 अगस्त 1955 की रात में ही लगभग 400 सत्याग्रही सीमा पर पहुँच गए।

❖ 15 अगस्त को प्रधानमंत्री के भाषण के साथ ही सत्याग्रह शुरू हुआ। वसंतराव ओक के नेतृत्व वाला जत्था आगे बढ़ने लगा, सामने पुलिस की चौकी होने से सत्याग्रहियों का उत्साह दुगुना हो गया।

❖ पुर्तगाली सैनिकों की चेतावनी का सत्याग्रहियों पर कोई असर नहीं हुआ। सत्याग्रही आगे बढ़ते गए तो सैनिकों ने गोली चला दी। गोली वसंतराव ओक के पैर में लगी। एक के बाद एक सत्याग्रह के नेतृत्वकर्ताओं पर गोली चलती गई और तिरंगा अन्य सत्याग्रही संभालता गया, किसी ने तिरंगे को गिरने नहीं दिया।

❖ जब राजाभाऊ के हाथ मे तिरंगा आया तो राजाभाऊ तिरंगा लेकर बढ़ते गए। पुर्तगाली सैनिक ने राजाभाऊ के सिर पर गोली मारी और उनकी आँख और सिर से खून का फव्वारा फूट पड़ा। राजाभाऊ मूर्छित होकर गिर गए, उन्हें चिकित्सालय ले जाया गया। मातृभूमि की परतंत्रता की तड़प ऐसी कि चिकित्सालय में भी राजा को एक ही रट लगी रहती कि गोवा स्वतंत्र हुआ या नहीं।

❖ बहुत से प्रयासों के बाद भी वीरव्रती राजाभाऊ महाकाल को बचाया नहीं जा सका। 15 अगस्त 1955 को राजाभाऊ सदाकाल के लिए महाकाल की ज्योति में विलीन हो गए।

राजभाऊ महाकाल ने अपने लिए कभी कुछ नहीं चाहा। संयोग से राजाभाऊ का जन्म 26 जनवरी को हुआ और बलिदान 15 अगस्त को हुआ। कितना अद्भुत संयोग है।

जीना उसका जीना है जो औरों को जीवन देता है...

इंदौर मे संघ का 17 वर्ष का स्वयंसेवक मनोज.....जिसने 18 लोगों की बाढ़ में जान बचायी और स्वयं बलिदान हो गया

विजयलक्ष्मी सिंह

17 वर्ष की उम्र तो दुनिया छोड़कर जाने की नहीं होती। किन्तु वो तो मृत्यु के समक्ष चुनौती बनकर खड़ा था। जिनके नौनिहालों को वो खाली कनस्तर व लठ्ठों के सहारे मौत के मुँह से निकाल लाया था उन सब का रो-रो कर बुरा हाल था। 17 वर्षीय किशोर स्वयंसेवक मनोज चौहान की अर्थी 7 अगस्त 2005 को जब इंदौर के मारुति नगर से उठी थी, तो समूचे इंदौर की आँखों में आंसू थे। दो दिन तक बस्ती में घरों के चूल्हे नहीं जले थे। गणतंत्र दिवस पर अद्वितीय वीरता पुरस्कार से सम्मानित शहीद मनोज चौहान की कहानी युवाओं को देश के लिए जीना सिखाती है। यौवन की दहलीज पर कदम रखने वाले जिस आयु में अपने सतरंगी सपनों के संसार को सजाते हैं उस आयु में मनोज 18 लोगों का जीवन बचाते हुए स्वयं मौत की गहरी नींद सो गया।

बात 17 वर्ष पुरानी है जब 01 अगस्त 2005 को वर्षा का जल प्रलय बनकर इंदौर की निचली बस्तियों में प्रवेश कर गया था। बाणगंगा में सांवेर रोड पर ऐसी ही निचली बस्तियों में से एक थी मारुति नगर। इस बस्ती में घरों में पानी ऐसे घुसा कि बर्तन, बिस्तर, मच्छरदानी के साथ साथ छोटे-छोटे बच्चे भी बहने लगे। प्रशासन जब तक इस बस्ती में मदद के लिए पहुंचता इससे पहले ही बस्ती में संघ की नियमित शाखा लगाने वाले मनोज ने अपने साथियों बबन पांडे और सुरेश बाथा के साथ बचाव अभियान शुरु कर दिया। इन लोगों ने खाली टिन, कनस्तर, लट्टे व ट्यूब इकट्ठे किये और निकल पड़े इनके सहारे लोगों का जीवन बचाने। मनोज जब छोटे-छोटे बच्चों को उनके घरों से निकालकर सुरक्षित स्थानों पर ले जा रहा था तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर संपर्क प्रमुख डॉ आनंद प्रकाश मिश्रा की चेतावनी उसके कानों में गूंज रही थी। ''मनोज तुम्हारे हार्ट के वॉल्व खराब हो चुके हैं तुम पानी से दूर रहना व अधिक मेहनत मत करना अन्यथा ये तुम्हारे लिए जान लेवा साबित हो सकता है।'' किन्तु धीरे-धीरे मनोज के कानों से ये स्वर लुप्त होते चले गये व शाखा में रोज गाये जाने वाले गीत की पक्तियां गूंजने लगीं ...**'सेवा है यज्ञ कुंड, समिधा सम हम जलें'।** मनोज सुबह 4 बजे से रात 12 बजे तक निरंतर पीड़ित परिवारों की मदद करता रहा। यह राष्ट्र भक्त नौजवान 18 लोगों को सकुशल भयावह पानी के चुंगल से निकाल लाया किन्तु तब तक उसके फेफड़ों में पानी भरना शुरू हो गया था। फिर भी वो अगले दिन बस्ती के परिवारों की जरूरतों की सूची बनाने, राशन व अन्य वस्तुएं पहुंचाने में लगा रहा। केशव नगर के तत्कालीन नगर कार्यवाह अनिल पंचवाल जी गोयल बताते हैं कि **'इतने अधिक श्रम के कारण मनोज के कमजोर शरीर ने जवाब दे दिया था। निमोनिया इस कदर उसके शरीर में फैला कि उसे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा और मनोज इस बीमारी से मात्र दो दिवस में जिन्दंगी की जंग हार गया'।**

अपने पीछे दिव्यांग पिता उमराव सिंह चौहान, मानसिक रूप से कमजोर भाई सोनू व रोती बिलखती माँ को छोड़कर जब मनोज ने आँखें मूंद लीं तो मारूति नगर में दो दिन तक घरों में चूल्हा नहीं जला। उसी बस्ती में रहने वाली लक्ष्मी देवी मनोज को याद करते हुए कहती हैं कि 'वो बालक तो भगवान् का भेजा दूत था, जो मेरे सात वर्ष के पोते को अपनी जान पर खेल कर पानी के बीच से निकाल लाया'। मृत्यु के समय उसकी जेब से एक सूची मिली जिसमें पीड़ित परिवारों के सदस्यों के नाम व जरूरत की सामग्री लिखी थी। वर्ष 2007 में जब भारतीय बाल कल्याण परिषद ने मनोज चौहान को उसकी अद्वितीय वीरता के लिए गणतंत्र दिवस पर सम्मानित करने का निर्णय लिया तब तक मनोज को इस दुनिया से विदा लिए 2 वर्ष बीत चुके थे। इस पुरस्कार के लिए राष्ट्रपति को पत्र लिखने वाले और संबन्धित प्रक्रिया पूर्ण करने वाले नगर के प्रसिद्ध चार्टर्ड अकाउंटेंट राधेश्याम सोमानी व डॉक्टर शैलेंद्र जैन मनोज को याद करते हुए भावुक हो जाते हैं। वे कहते हैं कि **मनोज गणतंत्र दिवस पर हाथी पर तो नहीं बैठ सका किन्तु सदैव के लिए इंदौर के लोगों के हृदय में सम्मान का प्रतीक बन गया।**

गौ एवं धर्मरक्षक -भगवान देवनारायण जी

पिछले अंक में लोकदेवता भगवान देवनारायण जी पर आधारित लेख में कुछ त्रुटियॉ हुई थी, जिसे भुल-सुधार के साथ हम पुनः प्रकाशित कर रहे है। भगवान श्री देवनारायणजी बगड़ावत वंश के गुर्जर थे जिनका मूल स्थान वर्तमान में अजमेर (राजस्थान) के निकट नाग पहाड़ था। प्रचलित लोक कथाओं के माध्यम से शौर्य पुरूष भगवानश्री देवनारायणजी के सम्बंध में विस्तृत जानकारी मिलती है। देवनारायण महागाथा में इन्हें चौहान वंश का बताया हैं।

देवनारायणजी की फड़ के अनुसार माण्डलजी के हरिरामजी, हीररामजी के बाघसिंहजी और बाघसिंहजी को चौबीस पुत्र हुए जो बगड़ावत कहलायें। इन्हीं में से बड़े भाई पराक्रमी वीर गुजर श्री सवाई भोज और माता साढू (साढ़ू) के यहां पुत्र के रूप में कमल पुष्प पर अवतारी अलौकिक भगवानश्री देवनारायणजी का जन्म विक्रम संवत 968 (911 ईसवी) में माघ शुक्ला छठ सप्तमी की रात को मालासेरी (राजस्थान) में हुआ।

चौबीस बगड़ावत भाईयों में वीर भोजजी सबसे सुंदर, पराक्रमी और वीर थे। नाग पहाड़ में गाये चराते हुए उन्हें आत्मदर्शी योगीराज भगवान श्री शिवजी के दर्शन हुए जिन्होंने उन्हें बारह वर्ष की काया और माया दी। जयमंगला हाथी, बूंली घोड़ी और चंचला तलवार दी।

रानी जयमती (जैमती) को लेकर रांण के राजा दुर्जनसाल से बगड़ावतो का युद्ध हुआ। युद्ध से पूर्व बगड़ावतो तथा दुर्जनसाल में मित्रता थी तथा वे धर्म के भाई बने थे। बगड़ावत भारत का महायुद्ध खारी नदी के किनारे हुआ था। वीरता से लड़ते हुए बगड़ावत वीर गति को प्राप्त हुए। बाद में भगवान श्री देवनारायणजी का अवतार हुआ और उन्होंने राजा दुर्जनसाल का वध कर अपने पिता के बेरी से अपना बेर चुकाया। भगवान श्री देवनारायणजी को राजा दुर्जनसाल से बचाते हुए माता साढू, छोछू भाट के साथ अपने मायके मालवा में आ जाती है। यहीं पर ही बालक रूपी श्री देवनारायणजी भगवान ने गाये चराने के साथ ही अपनी लीलाओं द्वारा दुष्टों का संहार एवं

भक्तों का उद्धार किया। **भगवान श्रीकृष्ण की तरह ही भगवान श्री देवनारायणजी भी गायों के रक्षक थे। उन्होंने बगड़ावतो की गायों की खोजकर उन्हें चराया।** देवनारायणजी प्रातःकाल उठते ही गौ-माता के दर्शन करते थे। यह गाय बगड़ावतो के गुरु रूपनाथजी ने सवाई भोज को दी थी। जब देवनारायणजी की गाये राण भिनाय का राणा घेर कर ले जाता तो देवनारायणजी गायों की रक्षार्थ राजा से युद्ध करते और गायों को छुड़ाकर लाते थे। भगवान ने अपने अनुयाइयों को गायों की रक्षा का संदेश दिया।

भगवानश्री देवनारायणजी ने धार के राजा जयसिंहजी परमार की पुत्री पीपलदे को अच्छा किया था। बाद में राजा जयसिंहजी ने अपनी इसी पुत्री पीपलदे का विवाह देवनारायण जी से किया। देवनारायणजी व पीपलदे के एक पुत्र बीला व पुत्री बीली उत्पन्न हुई।

भगवानश्री देवनारायणजी को अनेक सिद्धियां प्राप्त थी। अपने देवीय चमत्कारों द्वारा वे धीरे-धीरे गुर्जरों एवं पशुपालक किसान एवं सभी वर्गों के देवस्वरूप बनते गये और अपने ईष्टदेव (भगवान) के रूप में पूजे जाने लगे। भगवान श्री देवनारायणजी को भगवान श्री विष्णुजी के अवतार के रूप में गुर्जर समाज और अन्य सभी समाजों द्वारा लोकदेवता के रूप में पूजा की जाती है।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाईट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते है।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

www.jagratmalwa.com

ये बंधन नहीं विश्वास है.....

डॉ. सोनाली नरगुंदे

रंग बिरंगी राखी लेकर आई बहना राखी बंधवा ले मेरे वीर। और बहना ने भाई की कलाई पर प्यार बांधा है, प्यार के दो तार से संसार बांधा है। यह गीत सुनते हुए किसी की आंखें नम ना हों ऐसा इंसान हमारी भारत भूमि पर तो नहीं मिलेगा। श्रावण पूर्णिमा को मनाया जाने वाला रक्षाबंधन का त्यौहार अपने साथ बहुत सी सौगातें लेकर आता है। मौसम का परिवर्तन, ईश्वर की अराधना एक और चातुर्मास का संकल्प, बाजार में नए नारियल की आवक सब कुछ बिल्कुल दूध शक्कर का मिलन लगता है। प्रकृति की प्रसन्नता रिश्तों के साथ में रहने पर और भी अद्भुत वातावरण का निर्माण करती है। रक्षाबंधन या राखी एक धागे के साथ जोड़कर देखा जाने वाला रिश्ता-पर इसका मूल्य क्या है?

यह संबंध वह बखूबी समझ सकता है जिसका भाई हो और वह देश की सेवा करने दूर चला गया हो। ऐसी लड़कियां जिनका भाई नहीं हो और कोई और उन्हें भाई का संबल देता है या फिर वे पिता अथवा मित्रों में भाई की छवि पाती हैं। हमारे ऐसे भाई जिन्हें जेल में जाकर कोई बहन एक प्यार का धागा बांधती है। यह एक खूबसूरत एहसास है। इसे समझने के लिए कोई बहुत बड़ा गणित नहीं समझना होता है। यह तो सिर्फ दिल की अनुभूतियों से समझने और जीने का रिश्ता है। भाई के बहन और बहन के लिए भाई एक सुरक्षा है, एक संबल है। सहारा तो हर किसी को प्रकृति देती है परंतु यह रिश्ता समझ के लिए एक नई राह बनाता है। रिश्तों की अनुभूति और समझ रखना ही सही इंसानियत है। ऐसे में इस रिश्ते को कोई खराब करता है तो उसे ईश्वर भी क्षमा नहीं करते। इसे यदि प्रकृति के नियम से देखें तो विश्वास और प्रेम ही इस रिश्ते का आधार है। इन दोनों के सही तालमेल से भाई-बहन का रिश्ता सहजता और संपूर्णता के साथ चलता है भले ही इसमें दूसरे लोग आकर कितना ही जहर घोलें।

राखी महज बांधने की वस्तु नहीं वरन् निभाने का जज्बा है। तेरा-मेरा, हमारा, इसका-उसका किए बिना दो लोग एक प्रेम को जी सकते हैं। दुनिया में सभी रिश्तों में अंतर आ सकता है परंतु इस रिश्ते में नहीं आना चाहिए क्योंकि ये दो लोग पैदाइश से एक दूसरे को जानते और समझते हैं। मानी हुई बहन और माना हुआ भाई राखी धागे का संबंध हमारे ही समाज में होता है। इस कारण भारतीय समाज में रिश्तों का ताना-बाना आज भी उसी तरह कसा हुआ है। यह रिश्तों की कसावट बनी रहे इसके लिए वर्तमान पीढ़ी, आने वाली पीढ़ी में रिश्तों की संवेदनाओं का बीजारोपण करे। इससे हमें विश्व

में होने वाली भावनात्मक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। हम बहनों के लिए भैया आता है एक दिन साल में। ऐसी भावनाओं के साथ मायके आई विवाहित स्त्रियां ना जाने कितने जतन करती हैं। यह दिन एक ऐसा दिन है जब हर किसी को अपने भाई और बहन की याद रहती है। इस कारण इन्हें जतन से सहेजना होगा।

परंपरा में रक्षाबंधन

पौराणिक कथाओं में रक्षाबंधन के अनेक उदाहरण मिलते हैं। इंद्र की पत्नी शुचि ने विष्णु को रक्षासूत्र भेजकर सहायता मांगी जब असुरों के राजा बलि ने इंद्र को परास्त कर दिया था। इसी प्रकार एक कथा में बलि और विष्णु के साथ रहने पर लक्ष्मी ने बलि को भाई बना लिया। कृष्ण और द्रोपदी के बारे में सभी को पता है कि वस्त्रहरण के समय कृष्ण ने द्रोपदी की सहायता की थी। ऐसे ही राजनीतिक भाई-बहन के रिश्ते बनाने के अनेक उदाहरण हैं।

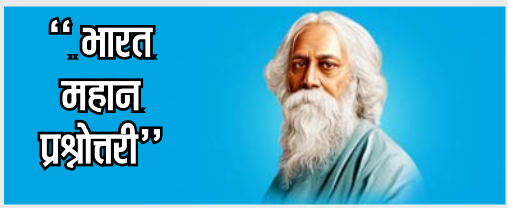

1. रविंद्रनाथ टैगोर का जन्म कब व कहाँ हुआ था?
2. टैगोर की पुण्यतिथि कब आती है?
4. टैगोर ने किसकी रचना की थी?
5. टैगोर मूलतः किस भाषा के कवि थे?

उत्तर इसी अंक में

बारिश - डेंगू और वायरल बुखार

वर्षाकाल में बीमारियाँ भी आती है, विशेषकर जलभराव इत्यादि के कारण मच्छरों की संख्या में वृद्धि, गीले होने से तथा मौसम परिवर्तन से डेंगू,चिकनगुनिया व वायरल बुखार के मरीज तेजी से बढ़ते हैं। इस स्तभ में जानिए कि कैसे बारिश में बीमारियाँ फैलती हैं और उनसे बचा जा सकता है

डेंगू, चिकुनगुनिया वायरल बुखार फैलाने वाला मच्छर बहुत छोटा काला, काली सफेद टाँग वाला एवं फुर्तीला होता है जो प्रायः आसानी से नजर ही नहीं आता। एक ही समय में संक्रमित मच्छर प्रायः दिन में कई लोगों को काटकर बीमार कर सकता है।

मच्छर के काटने से बरसात में फैलने वाले महामारी रूपी वायरल बुखार के लक्षण एवं उपचार निम्न हैं -

प्राणघातक डेंगू वायरल तेज बुखार - ये एडीज़ एजिप्टी प्रजाति के संक्रमित मच्छर के काटने से फैलने वाला वायरल बुखार है जो मच्छर के काटने के 4 से 6 दिन बाद चढ़ता है। बुखार लगभग 1 सप्ताह तक रहता है। डेंगू बुखार के लक्षण निम्नानुसार हैंः-

1. शरीर के तापमान में अचानक तेजी से वृद्धि जो प्रायः अन्य वायरल बुखार के समान होता है, इसके साथ शरीर में चकत्ते भी होते हैं। तेज सिर दर्द एवं लाल चेहरा होना। पीठ दर्द, माँसपेशियों तथा जोड़ों/हड्डियों में अत्याधिक तेज दर्द, जिस कारण इसे हड्डी तोड़ बुखार भी कहा जाता है।

2. आँखों को हिलाने में दर्द, रोशनी से चकाचौंध (चुभन)।

3. चेहरे, गले तथा छाती पर छुटपुट चकत्ते या तीव्र चुभन वाले फोड़े-फुंसी इसके बाद तीसरे या चौथे दिन स्पष्ट चकत्ते दिखना। स्वाद का बदलना, गले में कष्ट, मितली तथा उल्टी, सामान्य अवसाद (डिप्रेशन) इत्यादि।

यदि कोई जटिलता जैसे कि बहुत तेज बुखार, काला मल एवं नाक, मसूड़ों से रक्त स्त्राव की प्रवृत्ति हो तो डेंगू जानलेवा हो सकता है। ऐसे में मरीज को तत्काल अस्पताल में दाखिल किये जाने की जरूरत रहती है।

डेंगू का उपचार - रोग को ठीक करने की कोई विशिष्ट दवा नहीं है चिकित्सक द्वारा केवल लक्षण आधारित उपचार किया जाता है ताकि मरीज की जान बचाई जा सके। शरीर के तापक्रम को 39°C (102°F) से नीचे रखने के लिये पैरासिटामोल की गोलियों का सेवन एवं माथा सहित हाथ-पांव को सामान्य ठंडे पानी के कपड़े से पोंछने की सलाह बुखार नियंत्रण हेतु, साथ ही प्रोटीन युक्त आहार, भरपूर पानी, ओआरएस (इलेक्ट्रॉल), घर में ही निकाले गये फलों के रस पीने की, तैलीय भोजन न करने की और पूर्ण आराम की सलाह चिकित्सक देते हैं। आराम न करने पर बुखार रिपीट हो सकता है। इस रोग में एस्प्रिन या एंटी इन्फ्लेमेटरी दवाओं का सेवन नहीं करना चाहिये, अन्यथा रक्तस्त्राव अधिक हो सकता है। इस बुखार में रक्त प्लाज़्मा में कमी आती है जिसकी समुचित पूर्ति शरीर में समय पर न किये जाने एवं बुखार को कंट्रोल न करने पर रोग घातक हो सकता है।

जोड़ों में दर्द वाला चिकुनगुनिया बुखार - यह एडीज़ मच्छर के काटने से होने वाला वायरल बुखार है। जो संक्रमित मच्छर के काटने के बाद प्रायः 2 से 3 दिन में चढ़ता है। ये अवधि 1 से 12 दिन भी हो सकती है। इसके निनलिखित लक्षण हैं -

1. चकत्तों के साथ या इनके बगैर सूजन 2. सिर दर्द, उल्टी, प्रकाश से चुभन 3. जोड़ों के दर्द, शरीर का विशेष प्रकार से आगे की ओर झुकना और इनके साथ एक से तीन दिन तक बुखार। बुखार अचानक बढ़ जाता और 39°C से 40°C (102° से 104° फेरन हीट) तक पहुँच जाता है इसके साथ बीच-बीच में कंपकपाने वाली ठंड लगती है। यह तीव्र अवस्था दो या तीन दिन रहती है। जोड़ों का दर्द मुख्यतया हाथों, कलाइयों, कोहनी, टखनों तथा पैरों के छोटे-छोटे जोड़ों में होता है। इसमें बड़े जोड़ कम प्रभावित होते हैं। सुबह के समय चलने-फिरने में दर्द बहुत अधिक होता है, जो हल्की कसरत द्वारा कम हो जाता है, किन्तु कठिन कसरत से यह और भी बढ़ जाता है। इसमें सूजन भी हो सकती है किन्तु द्रव (फ्लूइड) का जमाव नहीं देखा जाता। तीव्र लक्षण प्रायः दस दिनों से अधिक नहीं रहते। रोग के कम असर वाले रोगी प्रायः कुछ सप्ताहों में रोग के लक्षणों से मुक्त हो जाते हैं किन्तु अधिक गम्भीर रोगियों को पूर्वतया ठीक होने में कई महीने तक लग जाते हैं।

प्राकृतिक कृषि में पोषक तत्वों का विज्ञान

अशोक कुमार पाटीदार

अधिक उपज की होड़ में हमने प्राकृतिक कृषि से मुँह फेर लिया, उसके दुष्परिणाम आज हमें दिख रहे हैं, प्राकृतिक कृषि ढकोसला नहीं बल्कि विज्ञान है, जो भूमि को अधिक उपजाऊ और काया को निरोगी रखती है। किसी भी पौधे के शरीर में 98.6 प्रतिशत कार्बन, हाइड्रोजन व ऑक्सीजन का हिस्सा होता है। जबकि अन्य आवश्यक सूक्ष्म तत्वों का प्रतिशत मात्र 1.4 प्रतिशत होता हैं।

प्राकृतिक कृषि में धरती माता को अन्नपूर्णा कहते है। इसमें सभी प्रकार के पोषक तत्व उपलब्ध रहते हैं किंतु वह उस स्वरूप में नहीं होते कि पौधा उन्हें सीधे ग्रहण कर सके। आधुनिक कृषि वैज्ञानिकों का भी मानना है यदि किसान अपने खेत में उचित तापमान, आर्द्रता तथा प्रचुर मात्रा में जैविक कार्बन की उपस्थिति का ध्यान रख पाएं तो सूक्ष्म जीवों की संख्या में इतनी वृद्धि होती है कि 1 एकड़ क्षेत्र में 800 से 1000 किलोग्राम तक सूक्ष्म जीव पैदा होते हैं। यह सूक्ष्म जीव निर्बाध रूप से पैदा भी होते हैं और मरते भी रहते हैं। एक जीवाणु की जब मृत्यु होती है तो इसमें 14 प्रतिशत नाइट्रोजन, 40 प्रतिशत कार्बन तथा 3 प्रतिशत फास्फोरस प्राप्त होता है, इस तरह से यदि 1000 किलोग्राम सूक्ष्म जीव जब मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं तो इससे 400 किलोग्राम कार्बन, 140 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 30 किलोग्राम फास्फोरस मिट्टी में मिल जाती है।

मिट्टी के अंदर आदर्श तापमान एवं आर्द्रता उपलब्ध होने पर तथा प्रचुर मात्रा में जैविक पदार्थों की उपस्थिति में कई प्रकार की सूक्ष्म जैव तथा रासायनिक क्रियाएँ सतत रूप से सम्पन्न होती रहती हैं। मिट्टी में सूक्ष्म जीव बैक्टीरिया, फफूंद, शैवाल, कवक, प्रोटोजोआ, आदि की संख्या में तीव्रता से वृद्धि होती है। इन सूक्ष्म जीवों की क्रियाशीलता तथा जैव रासायनिक क्रियाओं के फलस्वरूप प्रकृति में विभिन्न स्रोतों से अन्य आवश्यक पोषक तत्व घुलनशील अवस्था में पौधे को उपलब्ध होते रहते हैं।

इस हेतु आवश्यक है पेड़ पौधों की सूखी टहनियाँ, पत्तियाँ तथा पूर्व फसल के अवशेषों का उपयोग कर मिट्टी के सतह को आच्छादित रखने के कोशिश करनी चाहिए । जहां तक संभव हो मिट्टी की ऊपरी सतह को सूर्य के सीधे ताप से बचाया जाना चाहिए जिससे मिट्टी की सतह पर सूक्ष्म जीवों के प्रजनन एवं क्रियाशीलता को अबाधित गति मिल सके।

अतः अंधाधुंध रसायनों के उपयोग से बचिए क्योंकि आत्यधिक रासायनिक खाद से न केवल सूक्ष्म जीवों का जीवन प्रभावित होता है अपितु धरती में पाए जाने वाले केंचुए भी मार जाते हैं।

उदाहरण के लिए भूमि में जब आप यूरिया डालते हो मिट्टी में क्षारीय तत्व बढ़ता है इसमें 40 प्रतिशत नाइट्रोजन बाकी क्षारीय तत्व है। नतीजा मिट्टी में पानी का संग्रहण नहीं होता, मिट्टी कठोर हो जाती है। अगर धरती पर देसी केंचुए नहीं होते तो शायद जंगल भी खड़े नहीं होते और ना ही फसल पक पाती । भूमि को सुजलाम् सुफलाम् बनाने में देसी केंचुए की अहम भूमिका है । जब भी वे भूमि में प्रवेश करते हैं, तो भूमि में छेद करते हैं और गहराई तक जाते हैं। वापस लौटते समय नया छेद करते हैं और ऊपर आकर अपनी विष्ठा भी भूमि की सतह पर डाल देते हैं और नए छेद से फिर अंदर घुसते हैं । यही क्रम जारी रहता है । आपको आश्चर्य होगा केंचुओ की विष्ठा में मिट्टी से 7 गुना ज्यादा नाइट्रोजन, 9 गुना ज्यादा फास्फेट,11 गुना पोटाश, 6 गुना ज्यादा कैल्शियम, 8 गुना ज्यादा मैग्नीशियम, 10 गुना ज्यादा सल्फर है, बाकी अन्य खाद्य तत्व अनेक गुणा मात्रा में होते हैं । इसलिए कहते हैं हमारी मिट्टी खाद्य तत्वों की महासागर है । यह भविष्य की अनमोल निधि है इसका संरक्षण व भूमि का सुपोषण आवश्यक है ।

मालवा भी जलवायु परिवर्तन से प्रभावित

अपने जिस मालवा के बारे में यह कहा जाता है कि यहाँ सभी मौसम अनुकूल रहते हैं न अधिक गर्मी न अधिक वर्षा न ही ठंड। उस अपने मालवा पर भी जलवायु परिवर्तन का खतरा मंडरा रहा है। मालवा का तापमान लगातार बढ़ रहा है।

डा. ओ.पी. जोशी

दुनिया के सर्वश्रेष्ठ जलवायु वाले म.प्र. के मालवा क्षेत्र में भी जलवायु परिवर्तन का प्रभाव दिखायी देने लगा है। मालवा की सर्द रातें इसकी विशेषता थीं परन्तु बढ़ते तापमान से यह घटती जा रही हैं। तेज गर्मी के दिनों में भी यहां रातें ठंडी होकर एक सुखद अनुभव देती थीं। पिछले कुछ वर्षों में यहां का रात एवं दिन का औसत तापमान बढ़ा है। गर्मी के मौसम में तीन महिनों का औसत न्यूनतम तापमान 02 से 03 डिग्री सेल्शियस तक बढ़ा है। वर्ष 2005 से 2010 के मध्य इन्दौर शहर का अप्रैल माह का अधिकतर तापमान 40.8 से बढ़कर 43.0 डिग्री तक आंका गया है। इन्दौर के कृषि महाविद्यालय के मौसम विभाग के वैज्ञानिकों ने मालवा के पिछले 80 वर्षों के मौसम के आंकड़ों का अध्ययन कर कुछ वर्षों पूर्व बताया था कि यहां वर्षा के दिन घट रहे हैं। 40-45 दिनों होने वाली वर्षा 30-35 दिनों पर सिमट गयी है। वर्ष 2015 में तो 18-20 जुलाई से प्रारंभ हुई वर्षा ने 20-22 अगस्त तक अपना कोटा पूरा कर दिया था। वर्षा के दिनों में आयी वर्षा के साथ साथ वर्षा की तीव्रता बढ़ी है। वर्ष 2005 को जुलाई में 24 घंटों में 10 इंच पानी गिरा था। बदलती जलवायु का प्रभाव पेड़ पौधों पर भी होने लगा है। कुछ प्रारंभिक अध्ययन अनुसार फल, बीज एवं फूलों के आकार प्रकार में आंशिक बदलाव देखा गया है। बसंत ऋतु में आम पर कम फूल आने लगे हैं तथा गेहूं भी समय से पूर्व पकने लगा है। वन विभाग द्वारा किये गए एक अध्ययन अनुसार मौसम में आए बदलाव तथा अवैध कटाई के कारण पेड़ों की लगभग 45 प्रजातियों पर विलुप्ती का खतरा मंडरा रहा है। ब्रिटेन तथा हमारे देश द्वारा संयुक्त रूप से जारी एक रिपोर्ट में बताया गया था कि मध्यप्रदेश में मालवा निमाड़ सहित वर्ष 2050 तक 4.0 डिग्री सेल्शियस तापमान बढ़ने की संभावना है। दिल्ली की एक स्वयंसेवी संस्था चेतना ने भी अपने अध्ययन में दर्शाया था कि मालवा गर्म हो रहा है एवं इसके तापमान में लगभग 02 डिग्री की वृद्धि हुई है तथा औसत आर्द्रता में 5 से 7 प्रतिशत की कमी आयी है। इस तापमान में वृद्धि का कारण कुछ लोगों ने राजस्थान के पोकरण में किये गये भूमिगत परमाणु विस्फोट को बताया। इससे असहमति जताते वन एवं मौसम विभाग के वैज्ञानिकों का विचार था कि वृक्षों की कटाई एवं आगजनी की घटनाएं, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कटते पेड़, जल स्त्रोतों एवं जल भूमियों (वेट लेंड्स) में आयी कमी, बढ़ता नगरीकरण एवं औद्योगिकरण भी तापमान वृद्धि के लिए जिम्मेदार है। तापमान वृद्धि के कारण कुछ भी रहे हों परन्तु इसे गंभीरता से लेकर पूरी रिपोर्ट केन्द्र के पर्यावरण मंत्रालय को भेजी गयी थी। मंत्रालय ने पूना के वैज्ञानिक डा.एन. बर्वे के नेतृत्व में एक समिति बनाकर इस संदर्भ में रिपोर्ट देने हेतु कहा था। जून 1981 में समिति की रिपोर्ट मंत्रालय को सौंपी एवं फरवरी 83 में पता चला कि रिपोर्ट गुम हो गयी है।

अब लगभग यह तय है कि जलवायु परिवर्तन एवं मौसम के बदलाव से मालवा क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा है। मालवा क्षेत्र में तेजी से बढ़ता औद्योगिकरण, नगरीकरण, सिमटती हरियाली, सूखते नदी जल के स्त्रोत एवं भूजल स्तर का गिरना आदि ऐसे कारण हैं जो जलवायु बदलाव की गति को तेज करेंगे। वैज्ञानिक यह संभावना भी जता रहे हैं कि समय रहते यदि जलवायु बदलाव रोकने के ठोस प्रयास नहीं किये गए तो मालवा व निमाड़ के मौसम एक समान होंगे।

ब्रह्मपुर(बुरहानपुर) के मेहुल केले के तनों से बना रहे फाइबर

मध्यप्रदेश के **'बनाना शहर'** में, मेहुल केले के तनों से फाइबर बना रहे हैं जिनसे बड़ी संख्या में सजावट की वस्तुएं बन रही हैं, कई महिलाओं को रोजगार मिल रहा है।

ब्रह्मपुर जो बनाना शहर के रूप मे प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ केले बहुत अधिक मात्रा में होते हैं, यहाँ के एक युवक ने इन केले के पेड़ के **'वेस्ट'** हो रहें तने से कुछ **'बेस्ट'** कर दिखाया है।

दरअसल बुरहानपुर के मेहुल श्रॉफ केले के तने से फाइबर बनाते हैं, इसे Banana Fiber कहते हैं। इस इलाके के किसान जब अपनी फसल काट लेते हैं तो मेहुल को सूचित करते हैं। मेहुल इन खेतों से केले के तने को लादकर अपने यूनिट तक ले आते हैं। यूनिट में जब केले के तने पहुँचते हैं, तो तीन-चार महिला कर्मचारी मिलकर इन्हें साफ करती हैं। इसके बाद, मशीन से इनके रेशे बनाए जाते हैं। एक केले के तने से लगभग 200 ग्राम रेशा मिलता है। रेशा बनने के बाद, इसे अलग-अलग जगह भेजा जाता है। मेहुल बताते हैं कि फिलहाल वह **'बिज़नेस टू बिज़नेस'** (B2B) मॉडल पर काम कर रहे हैं। उन्होंने इको फ्रेंडली कागज और कपड़ा बनाने वाली कुछ कंपनियों के साथ टाई-अप किया है। इन कंपनियों को वह रॉ मटीरियल भेजते हैं और वहाँ इको फ्रेंडली कागज और कपड़ा तैयार होता है।

इसके अलावा, वह कुछ महिला स्वयंसेवी समूहों के साथ भी काम कर रहे हैं। लगभग 50-60 महिलाओं को वह केले के रेशे देते हैं और इस रेशे से महिलाएं बत्ती, झाड़ू, टोकरी, पर्स, सैनिटरी नैपकिन जैसे उत्पाद बनाती हैं। मेहुल कहते हैं कि केले के रेशे का प्रयोग करके इको-फ्रेंडली सैनिटरी नैपकिन बनाए जा सकते हैं। ये सैनिटरी नैपकिन बायोडिग्रेडेबल होते हैं, जो दो से तीन महीने में डीकंपोज हो जाते हैं। केले के रेशे से बने इन उत्पादों को भी वह दूसरे संगठनों को देते हैं, जो आगे इन्हें ग्राहकों को बेचते हैं। कुछ समय पहले, उन्होंने केले के रेशे से बागवानी के लिए ग्रो बैग और पलवार भी बनाये हैं।

आगे की योजना - मेहुल कहते हैं, 'अब तक हम B2B मॉडल पर काम कर रहे हैं। लेकिन आने वाले कुछ समय में, मेरी कोशिश B2C मतलब सीधा ग्राहकों तक पहुँचने की है। इसलिए, हम अपने उत्पादों की ब्रांडिंग करने में जुटे हुए हैं। केले के रेशे से हम बहुत सी चीजें बना सकते हैं। लेकिन, सभी चीजों पर एकदम काम करना सही नहीं है, इसलिए हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं।'

अपना खुद का ब्रांड स्थापित करने के साथ-साथ, वह

किसानों को उद्यमी (एग्रीप्रन्योर) बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 'आज किसान के बच्चे किसानी नहीं करना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें इसमें फायदा नहीं दिखता। लेकिन, अगर हम किसानों को व्यवसाय से जोड़ें और उनके खेतों पर ही प्रोसेसिंग यूनिट बनाएं, तो उन्हें बहुत फायदा मिलेगा। इसलिए, आगे मेरी योजना है कि किसानों के खेतों पर, केले के तनों से रेशे बनाने की मशीनें लगाई जाएं, ताकि किसान खुद प्रोसेसिंग करें। फिलहाल, उनके लिए सिर्फ केले ही आजीविका का साधन हैं, लेकिन फिर केले के पूरे पेड़ को वह इस्तेमाल में ले पाएंगे।'

मेहुल आगे कहते है कि अभी तो सिर्फ शुरुआत है, उन्हें बहुत आगे जाना है। ताकि, एक दिन वह बड़े से बड़े ब्रांड को रॉ मटीरियल सप्लाई कर सकें। इतना ही नहीं, अगर मौका मिले तो वह खुद रेशे से कपड़े तैयार करने की भी चाह रखते हैं।

दो साल बाद नगर भ्रमण पर निकले बाबा महाकाल

सावन के पहले सोमवार को उज्जैन के महाकाल की सवारी बड़े ही ठाठ बाट से निकाली गई। दो साल बाद उज्जैन के राजा नगर भ्रमण पर निकले तो उनकी एक झलक पाने के लिए मार्ग पर लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। सवारी मार्ग पर रेड कारपेट बिछाया गया था। शाम 4 बजे से शुरू हुई बाबा की सवारी परंपरागत मार्गो से होती हुई शिप्रा नदी पहुंची जहां जलाभिषेक के बाद सवारी फिर महाकाल मंदिर के लिए रवाना हुई। ऐसी मान्यता है कि भगवान महाकाल सवारी के रूप में अपनी प्रजा का हाल जानने के लिए नगर भ्रमण पर निकलते हैं। भक्तों को भी उनकी सवारी का हर साल इंतजार रहता है लेकिन कोरोना के चलते दो साल से सवारी नहीं निकाली गई थी। इस साल जब बाबा नगर भ्रमण पर निकले तो सवारी यात्रा में चल रहे भक्त नाचते गाते मस्त नजर आए। वहीं सड़क के दोनों ओर हजारों की संख्या में भक्त अपने राजा की सवारी का इंतजार करते नजर आए।

मंदिर समिति के अध्यक्ष कलेक्टर आशीष सिंह ने परंपरागत पूजन के बाद राजा महाकाल को चांदी की पालकी में बैठाया और मंदिर से बाहर लेकर आए। मंदिर से निकलते ही पुलिस बैंड और जवानों के द्वारा उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। सवारी के आगे घोड़ा, बैंड, पुलिस टुकड़ी व भजन मंडलियां नाचते गाते चल रही थीं।

6 सवारी जानिए कब

पहली सवारी 18 जुलाई को निकाली गई, दूसरी सवारी 25 जुलाई, तीसरी 01 अगस्त, चौथी 08 अगस्त, पांचवी 15 अगस्त और छठी 22 अगस्त को निकाली जाएगी।

कविता
निर्मल धारा

निर्मल धारा निश्छल होकर, बहने लगी फिर से सरिता
अटूट प्रवाह में सतत् रुप से, प्रवाहित हुई फिर से सरिता

सात समुन्द्र पार देश में, सिञ्चनशक्ति दिखलाई है
हरा-भरा करने खेतों को, दृढ़इच्छा बतालाई है
श्रेष्ठ करेंगे साथ चलेंगे, कन्धे को कन्धा देकर
अपनी जड़ों को पानी देकर, प्रीत की धारा बहायी है

दशकों से अकाल पड़ा था, जीवनमूल्यों की फसलों का
संत्रास-हताश था जीवन सारा, अंकुर-कोंपल-कलियों का
चंचलता भी गायब हुई थी, फूल सी कोमल बचपन की
निर्मल जल संरक्षण अभाव में, क्षय हो जाता तन-मन का

समाप्त हो गई सारी चिन्ता, अकालमृत इस उपवन की
पिता तुल्य माली मिला है, प्रवाह करे जो कण-कण की
नदियों को माँ कहने वाला, भारत का बेटा आया है
अखिल विश्व की बात करें, आवाज पहचाने जन-जन की

अब नदियां बहती जाएंगी, अथाह जल के साथ में
देश नहीं विश्व सिञ्चित होगा, जब हाथ होंगे हाथ में
मानवता की सरिता बहे, यह उद्देश्य हमारा है
"जीओ और जीने दो" लक्ष्य, रहे हमारी बात में

वसुधैवकुटुम्बकम् पताका, फहराएगी चारों ओर
भारत विश्वगुरु बनेगा, गली-गली में उठा है शोर
पहले दिया था फिर से देंगे, विश्व को गीता का ज्ञान
बीत चुका कंटक अन्धेरा, हुआ उजाला हो गई भोर

- डॉ उमेश प्रताप वत्स

रॉकेट्री - एक साहसिक समीक्षा

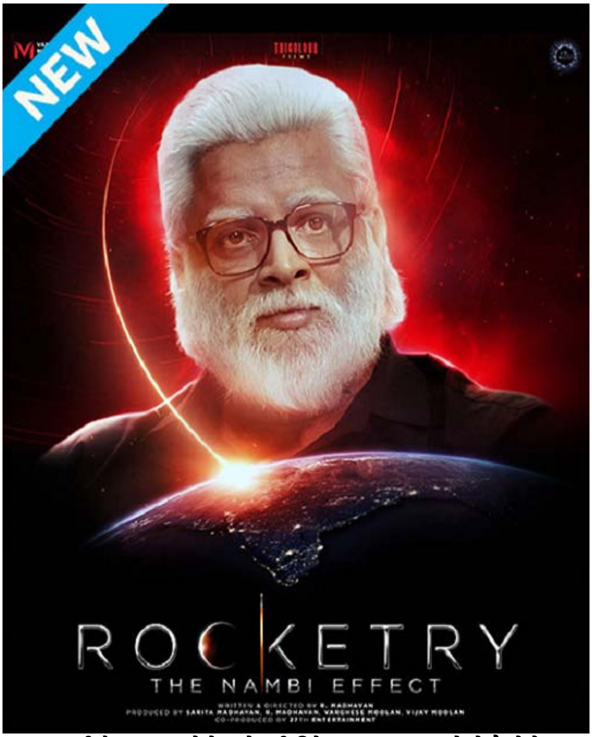

आजादी के बाद हमारे देश में रहीं विदेश परस्त सरकारों ने कैसे देश की प्रतिभाओं के विरुद्ध षड्यन्त्र रचे और लेकिन फिर भी प्रतिभाओं ने सब कुछ सहकर, विदेश के भारी पैकेज को ठुकराकर देश के लिए कार्य किया यह सबकुछ बताती फिल्म रॉकेट्री।

निःसंदेह, 'रॉकेट्री' अपने में अनूठी फिल्म कही जा सकती है। फिल्म इसरो वैज्ञानिक नंबी नारायणन के जीवन की उपलब्धियों और त्रासदियों को दिखाती है। यह सही मायने में एक वैज्ञानिक की बायोपिक है; जो बेवजह के फिल्मी मसालों से कोसों दूर है। फिल्म के मुख्य कलाकार माधवन ने नंबी के जीवन को पर्दे पर बखूबी उतारा है।

फिल्म की कहानी नवंबर 1994 के दौर से शुरू होती है। केरल की राजधानी तिरुअनंतपुरम स्थित नंबी के घर में प्रसन्नता का वातावरण है। वे एक शादी समारोह में जाने की तैयारी में हैं। परंतु तभी परिस्थितियां उलझ जाती हैं। केरल पुलिस मंदिर से नंबी को पकड़ कर पुलिस स्टेशन ले जाती है। उन पर देशद्रोह का आरोप लगाया जाता है। नंबी और उनका परिवार अवाक् रह जाता है कि यह क्या हो रहा है। उधर दर्शक भी नंबी को तब जान पाते हैं, जब मंगलयान की सफलता के बाद फिल्म स्टार शाहरुख खान, उक्त घटना के 19 साल बाद, इस वैज्ञानिक का साक्षात्कार करने जाते हैं, क्योंकि मंगलयान की तकनीक में नंबी की अहम भूमिका थी। मंगलयान की सफलता में जिस 'विकास' इंजन का बड़ा योगदान था उसे इसरो में नंबी और उनकी टीम ने बहुत कम लागत से देश में ही निर्मित किया था। तब साक्षात्कार में सवाल-जवाब के क्रम में कहानी फ्लैशबैक में जाती है। नंबी जवाब देते जाते हैं और दर्शक जानते जाते हैं कि नंबी कौन हैं, उनका अंतरिक्ष विज्ञान में क्या योगदान है। अंतरिक्ष विज्ञान में देश को शिखर पर पहुंचाने का सपना देखने वाले नंबी अपने समय से आगे के वैज्ञानिक थे।

अमेरिकी अंतरिक्ष संस्थान 'नासा' उन्हें अपने यहां मोटे वेतन व उत्तम सुविधाओं का प्रस्ताव देता है। लेकिन नंबी ये सब ठुकराकर कहते हैं, 'मैं सिर्फ अपने देश के लिए काम करना चाहता हूं'। भारत आकर वह अंतरिक्ष विज्ञान के लिए बहुत कुछ करते हैं। जैसे, वे 52 वैज्ञानिकों की टीम के साथ फ्रांस जाते हैं। रूस से कुछ उपकरण बहुत ही सस्ते में भारत लेकर आते हैं। उनकी इस प्रतिभा के चर्चे चल ही रहे होते हैं कि तभी उनकी जिंदगी में बड़ा तूफान आता है। जिस वैज्ञानिक ने देश के लिए इतना कुछ किया, उसे केरल पुलिस जासूसी और देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लेती है।

केरल पुलिस का गुप्तचर विभाग उन पर आरोप लगाता है कि उन्होंने अंतरिक्ष तकनीक के प्रामाणिक दस्तावेज पाकिस्तान को बेचे। यह 1994 की बात है। इसी के साथ नंबी के जीवन का वह काला अध्याय शुरू होता है, जिसे देख दर्शक बेचैन हो उठते हैं। देश के लिए इतना कुछ करने वाले नंबी को देशद्रोह के आरोप के चलते, इतनी बर्बरता से सताया जाता है कि देखने वाले की रूह कांप उठती है।

लेकिन उनके खिलाफ आरोप साबित न होने पर उन्हें जमानत पर छोड़ दिया गया। मामला सीबीआई को भेजा गया तो 1996 में सीबीआई ने भी उन्हें क्लीन चिट दे दी। यहां तक कि 1998 में सर्वोच्च न्यायालय ने भी नंबी के पक्ष में निर्णय देते हुए उन्हें निर्दोष करार दिया। उधर केन्द्र की मोदी सरकार ने नंबी के अनुपम योगदान को देखते हुए उन्हें 2019 में देश के तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मभूषण से सम्मानित किया।

इस तरह रॉकेट्री देश के लिए जीने वालों की महानता और तत्कालीन सरकारों द्वारा उन्हें हतोत्साहित करने के षड्यन्त्र से पर्दा उठाती है।

आगर मालवा में 13 मुस्लिमों ने मिलकर एक हिंदू पर किया जानलेवा हमला

आयुष माली पर उज्जैन मार्ग स्थित रॉयल ढाबे के सामने मुस्लिम लड़कों ने हमला कर दिया, आयुष को गाड़ी से गिराकर उसके साथ जमकर मारपीट की गई थी। इस मारपीट से उसके सिर में चोट आई। उसे उपचारार्थ अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

स्थानीय मीडिया के अनुसार आयुष ने गत दिनों नूपुर शर्मा के समर्थन में बयान दिया था जिसके बाद से ही कई मुस्लिम उसकी रेकी कर रहे थे और मारने की धमकी दे रहे थे और फिर आयुष पर जानलेवा हमला कर दिया गया। हमलावरों के नाम अम्मु, अरबाज, आसिफ, सरफराज, चिकी, अम्मू मेवाती, अमन, सोहेल, मुन्ना मेवाती, सलमान, फिरदौस, समीर और साजिद बताए जा रहे हैं। हमले के दौरान आसपास भीड़ जमा हो गई और पुलिस भी मौके पर पहुँच गई।

घटना की जानकारी होते ही सामाजिक संगठनों ने हमलावरों की तत्काल गिरफ्तारी की माँग करते हुए प्रदर्शन किया। पुलिस ने पीड़ित युवक के पिता की तहरीर पर आरोपितों के विरुद्ध हत्या के प्रयास, बलवा सहित मारपीट की अन्य धाराओं में केस दर्ज कर 2 आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है।

इंदौर मे ईद के दिन नाज़िम व उसके तीन दोस्तों ने किरायेदार पंकज को दो घंटे तक पीटा और गुदाद्वार मे पेट्रोल डाला

इंदौर से ईद के मौके पर चोंका देने वाला मामला सामने आया है, दरअसल पंकज डेढ़ साल से नाजिम के किराये के मकान में अपनी बहन ममता और ललिता के साथ रहकर पढ़ाई कर रहा था। ईद के दिन नाजिम खान ने पंकज से बोला कि चल बकरा खरीदकर लाते हैं, इसके बाद नाजिम खान व पड़ौसी आदिल खान दोनों पंकज को अपने साथ एक्टिवा से लेकर नायता मुंडला क्षेत्र में किसी के घर लेकर आये। जहाँ नाजिम के दो दोस्त पहले से ही थे। चारों दोस्त पंकज से बोले कि ऊपर छत पर बने रूम में बकरा रखा है जैसे ही पंकज ऊपर रूम के पास गया वैसे ही नाजिम, आदिल व अन्य दोनों साथियों ने पंकज को पकड़कर रूम के अंदर ले जाकर अंदर से बंद कर लिया। इसके बाद नाजिम ने उसका गला पकड़ लिया और बाकी तीनों ने उसके हाथ पैर बांध कर उल्टा पटक दिया और मोबाइल तथा पेटीएम पेमेंट बैंक का ए.टी.एम छीन लिया। इसके बाद नाजिम और उसके तीनों साथियों ने गालियां देते हुए प्लास्टिक के पाइप से व लात ठूंसों से मारपीट की तथा गुदा की जगह में छोटी बाटल से पेट्रोल डाला आगे कहा कि आदिवासी तुम सभी चोट्टे हो और चारों ने धमकाया कि घर पर एक्सीडेन्ट का बताना, नहीं तो तुझे जान से खत्म कर देंगे तथा तेरा विडियो वायरल कर देंगे। करीब दो घंटे पंकज को कमरे पर बंद कर मारपीट करने के बाद पंकज को नाजिम व आदिल वापस अंसारीबाग रूम पर लेकर आये। मारपीट के कारण पंकज के पूरे शरीर में चोटें आई हैं। दोनों के चले जाने के बाद पंकज ने अपनी बहन व दोस्तों को घटना के बारे में बताया तो उसके चचेरे भाई अंतरसिंह चौहान व दोस्त इन्दरसिंह मसानिया रिपोर्ट करवाने के लिए थाना लेकर आए। मामले में तेजाजी नगर पुलिस ने आरोपियों पर विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है।

मेधा पाटकर पर गंभीर आरोप

एफआईआर के अनुसार जनजातीय बच्चों की पढ़ाई के नाम पर चन्दा लेकर पाटेकर ने देशविरोधी गतिविधियों में लगाया

सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाम पर कभी किसान आंदोलन में शामिल होने वाली तो कभी सीएए के विरोध में प्रदर्शन करने वाली मेधा पाटकर के खिलाफ बड़वानी में केस दर्ज हुआ है। आरोप है कि नर्मदा नवनिर्माण अभियान की ट्रस्टी मेधा ने सामाजिक कार्यों के नाम पर इकट्ठा की गई 13.50 करोड़ रुपए से अधिक राशि का दुरुपयोग किया। उन्होंने इस रकम को राजनीतिक गतिविधियों और विकास परियोजनाओं के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने में इस्तेमाल किया।

शिकायतकर्ता के अनुसार, मेधा पाटकर दिखाती हैं कि उनकी संस्था नर्मदा नवनिर्माण अभियान के लोगों के कल्याण के लिए मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के जनजातीय बच्चों को प्राथमिक स्कूल की शिक्षा प्रदान करने के अलावा शैक्षिक उद्देश्यों के लिए आवासीय जीवन शालाएँ प्रदान करती है। लेकिन हकीकत में सामाजिक कल्याण के नाम पर इकट्ठा पैसों से धोखाधड़ी हो रही है। शिकायतकर्ता ने जानकारी दी कि मेधा पाटकर व संस्था से जुड़े अन्य लोगों ने नर्मदा नवनिर्माण अभियान के नाम पर 2007 से 2022 के बीच शैक्षणिक और सामाजिक गतिविधियों के नाम पर 13,52,59,304 रूपये इकट्ठा किए और इनका प्रयोग गलत उद्देश्यों से किया। पुलिस का कहना है कि जाँच के बाद इस केस में धाराएँ बढ़ सकती हैं।

एफआईआर में सवाल किए गए हैं कि 13,52,59,304 रूपये की राशि को संस्था द्वारा जमा व खर्च किया गया। लेकिन न तो इसके स्त्रोत पर खुलासा हुआ और न ही ये बताया गया कि ये इन्हें खर्च कहाँ किया गया है। एफआईआर में आरोप है कि इस राशि को राजनैतिक व राष्ट्र विरोधी एजेंडा फैलाने के लिए इस्तेमाल किया गया। शिकायतकर्ता ने माँग की है कि इस धनराशि के स्त्रोत और खर्च की जाँच होनी चाहिए।

एफआईआर में लिखा है कि मेधा पाटकर ने इंदौर की अदालत में अपनी आय को 6000 रुपए सालाना बताया था जबकि 2007 से 2021-22 के बीच 19,25,711 रुपए उन्हें प्राप्त हुए हैं। ऐसे में आशंका जताई गई कि नर्मदा नव निर्माण अभियान या तो धन शोधन के लिए खोला गया मोर्चा है या फिर इसे भारत विरोधी गतिविधियों का वित्त पोषण करने के लिए खोला गया है।

आजाद की जयंती के दिन ट्विटर पर ट्रेंड हुआ हेशटेग तीर्थभूमि आजादनगर

23 जुलाई महान स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद की जयंती का दिन होता है। मालवा-निमाड़ के नागरिक इस बात पर गर्व कर सकते है कि वे उसी भूमि पर रहते है जहाँ चंद्रशेखर आजाद का जन्म हुआ क्योंकि आजाद का जन्म झाबुआ के आजादनगर मे जिसे पहले भाबरा कहा जाता था वही हुआ है। आजाद नगर, आजाद की जन्मस्थली होने के कारण सभी भारतीयों के लिए एक प्रेरणा प्राप्त करने का स्थान है, देश के लिए कुछ करने वालों के लिए यह तीर्थ है। इसीलिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्विटर पर हजारों लोगों ने आजाद की जयंती के दिन #तीर्थभूमि_आजादनगर के साथ ट्वीट किए। हजारों लोगों द्वारा इस तरह ट्वीट किए जाने से देश के अन्य नागरिकों को आजाद की जन्मस्थली, वहाँ बने स्मारक व संग्रहालय के बारे मे जानकारी प्राप्त हुई। इससे भविष्य मे पर्यटक भी बढ़ सकते है और यह सामान्य नागरिकों के करने से हुआ है।

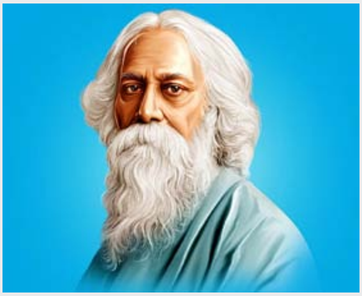

भारत महान प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. 07 मई 1861
2. 07 अगस्त
3. राष्ट्रगान
4. बांग्ला

स्वतंत्रता दिवस अमृत महोत्सव के निमित्त मालवा प्रांत में हो रहे कार्यक्रम

७५ स्वराज का अमृत महोत्सव

14 अगस्त को अखंड भारत संकल्प दिवस होता है। इतिहासपुरुषों ने भारत को फिर से अखंड करने को अनिवार्य बताया है

शब्द ''अखंड भारत राष्ट्रीयता के सभी मूल्यों को समाहित करता है'' और एक अभिन्न संस्कृति

- पीटी, दीनदयाल उपाध्याय

हम अधिग्रहित स्वतन्त्रता को मजबूत करें और अखण्ड भारत बनाने का संकल्प लें

- वीर सावरकर

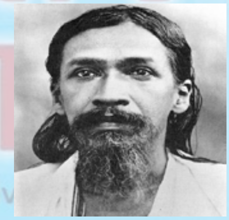

मैं स्पष्ट रूप से कल्पना कर सकता हूँ कि भारत माता पुनर्मिलन के बाद विश्वगुरू के आसन पर फिर से विराजमान होंगी

- अरविंदो घोष

सितम्बर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

- ता. ०१ खगुरू ग्रंथ साहिब प्रकाश दिवस
- ता. ०५ डॉ. राधाकृष्णन जयंती
- ता. ११ संत विनोबा भावे जयंती
- ता. १४ राष्ट्रीय हिन्दी दिवस
- ता. १५ इं. मोक्षगुंडम विश्वश्वैरिया जयंती
- ता. २५ पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यू इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341